National School of Drama
Repertory Company
presents

संस्कृति मंत्रालय MINISTRY OF CULTURE Government of India | Azadi Ka Amrit Mahotsav | G20

संगीतमय प्रस्तुति

बाबूजी

निर्देशन : राजेश सिंह

संगीत : स्व. ब.व.कारंत

कहानी : मिथिलेश्वर | नाट्य रूपांतरण : विभांशु वैभव

वेशभूषा : नलिनी जोशी | प्रकाश परिकल्पना : अवतार साहनी

National School of Drama Repertory Company
presents

22 – 25 दिसम्बर 2023 ; सायं 6.30 बजे

<u>अतिरिक्त प्रदर्शन</u>

22 दिसम्बर 2023 ; प्रातः 11 बजे

23 – 25 दिसम्बर 2023 ; दोपहर 3 बजे

टिकट : ₹ 100/- 200/- 300/- 400/-

ऑनलाइन टिकट www.bookmyshow.com

टिकट उपलब्ध होने पर, प्रदर्शन से एक घंटे पूर्व राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के काउंटर से प्राप्त कर सकते हैं।

अभिमंच सभागार

बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड
मंडी हाउस, नई दिल्ली - 110001

8 वर्ष से छोटे बच्चों का प्रवेश एवं कैमरा और मोबाइल फोन वर्जित है। कृपया कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन करें।

पूछताछ : 23031105, 23031106. : Web:www.nsd.gov.in

Babukodi Venkataramana

KARANTH

बाबूकोडी वेंकटरमण कारंत

(19 Sept. 1929 - 01 Sept. 2002)

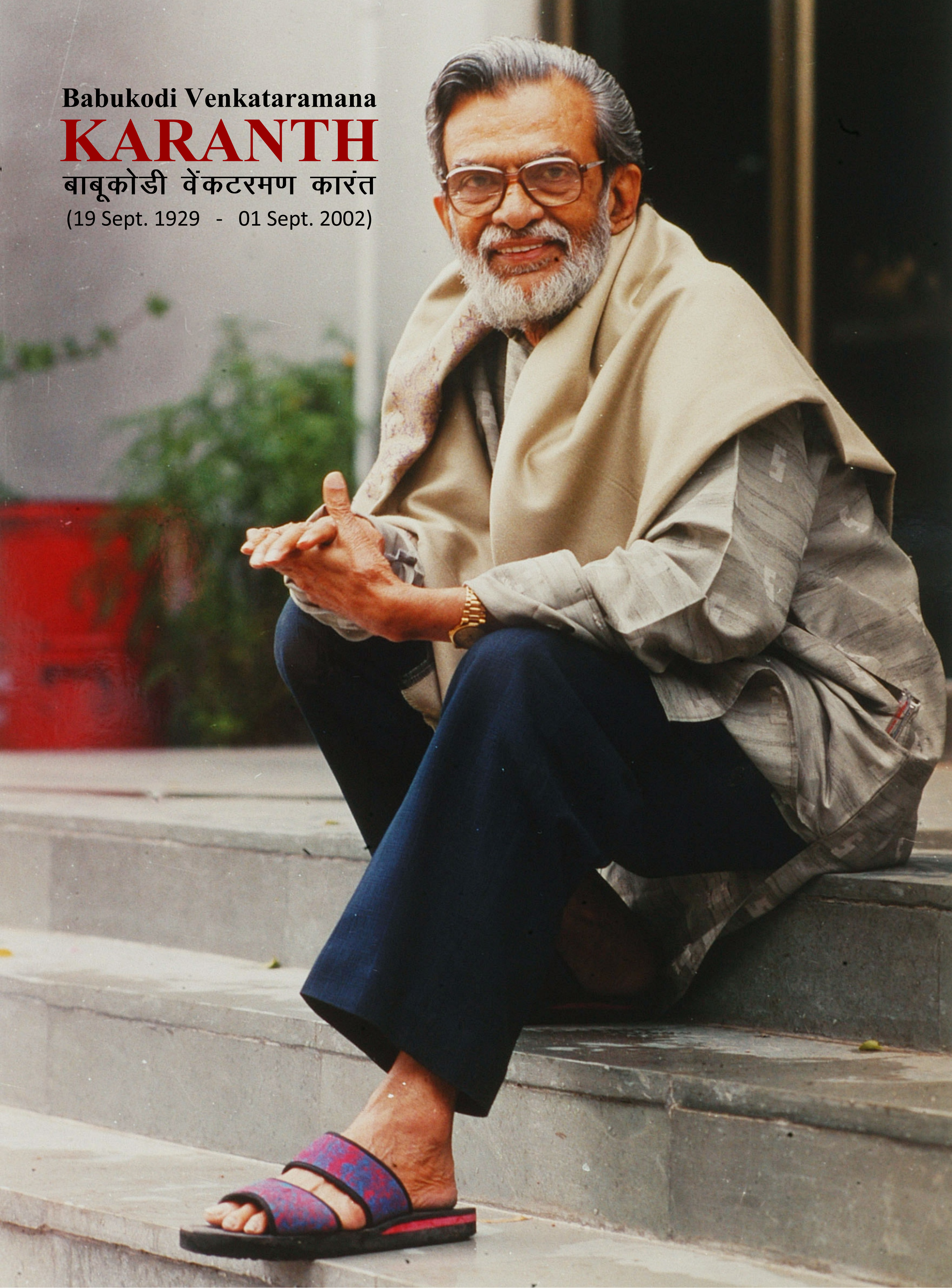

Music B. V. Karanth

Babukodi Venkataramana Karanth (B.V. Karanth) is one of the eminent personalities of Indian theatre. Karanth ji's contribution to Indian theater is incomparable. He was born in 1928 in a village named Kuwaje (Dakshina Kannada Karnataka). He has been associated with Gubbi Drama Company since childhood and also associated with other theatre institutions. He has a postgraduate degree in Hindi language. He left for Varanasi to learn Hindustani classical singing for three years under the guidance of renowned musician Pandit Omkarnath Thakur and to maintain his interest in music. He graduated from National School of Drama, Delhi. Prior to this, he has presented praiseworthy works with many Hindi theater institutions. Along with this, he had regular activities as a teacher in Sardar Patel Vidyalaya. He gave the theatre movement a new turn in other cities of India like Bhopal, Bangalore and Hegodu. He has adaptated many plays and also composed many successful plays for children. He has also been the director of the National School of Drama in 1977-81. He has made significant contribution as founder-director of Bharat Bhavan Rangamandala, Bhopal in 1982 and founder-director of Karnataka Rangayana (Mysore) in 1989-95. His main theatrical productions are Oedipus Sankranti, Hayavadan, Jokumaraswami, and Indrajit, Sattarvarneral, Panjarshale, Taddapi, Miss Sadaram, Kindarjogi, Kattale Bedku, Chandra-Haas, Gokula Nirgaman, Media, etc. in Kannada and Andher Nagari, Chhote Syed- Bade Syed in Hindi.. He has been honored with many awards like Padmashree, Kalidas Samman, Sangeet Natak Akademi, Amritlal Nagar and Gubbi Veeranna etc. Not only in theatre, He has also received many national and international awards for music and direction in films. Be it knowledge of classical music or folk music of the country, he had the incomparable ability to adapt any type of music into theater music.

संगीत ब.व.कारंत

बाबूकोडी वेंकटरमण कारंत (ब. व. कारंत) भारतीय रंगमंच की प्रख्यात हस्तियों में से एक हैं। भारतीय रंगमंच में कारंत जी का योगदान अतुलनीय है। उनका जन्म 1928 में कुवाजे (दक्षिणी कन्नड़ कर्नाटक) नामक गांव में हुआ था। वह बचपन से ही गुब्बी ड्रामा कंपनी से जुड़े रहे फिर देश के विभिन्न थिएटर संस्थानों में भी उन्होंने सेवाएं दी। वे हिंदी भाषा साहित्य में स्नातकोत्तर थे। वह प्रसिद्ध संगीतकार पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के मार्गदर्शन में तीन साल तक हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन सीखने और संगीत में अपनी रुचि बनाए रखने के लिए वाराणसी चले गए। उन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इससे पहले वे कई हिंदी थिएटर संस्थानों के साथ सराहनीय कार्य प्रस्तुत कर चुके थे । इसके साथ ही सरदार पटेल विद्यालय में शिक्षक के रूप में उनकी नियमित गतिविधियाँ रहीं। आपने भारत के अन्य शहरों जैसे भोपाल, बेंगलुरु, हेगोडु आदि में थिएटर आंदोलन को एक नया मोड़ दिया। आपने नाटकों का रूपांतरण किया है और बच्चों के लिए कई सफल नाटकों की रचना भी की है। वे 1977–81 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक भी रहे । उन्होंने 1982 में भारत भवन रंगमंडल, भोपाल के संस्थापक–निदेशक और 1989–95 में कर्नाटक रंगायन (मैसूर) के संस्थापक–निदेशक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया । कन्नड़ और हिंदी भाषा में उनकी प्रमुख नाट्य प्रस्तुतियाँ, ओडिपस संक्रांति, हयवदन, जोकुमारस्वामी, इंद्रजीत, सत्तारवर्नेरल, पंजरशले, तड्डापी, मिस सदाराम, किंदरजोगी, कट्टाले बेदकु, चंद्र–हास, गोकुला निर्गमन, मीडिया, अंधेर नगरी, छोटे सैयद– बड़े सैयद आदि है । आपको पद्मश्री, कालिदास सम्मान, संगीत नाटक अकादमी, अमृतलाल नागर और गुब्बी वीरन्ना आदि जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। केवल थिएटर में ही नहीं, उन्हें फिल्मों में संगीत और निर्देशन के लिए भी कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। शास्त्रीय संगीत का ज्ञान हो या देश के लोक संगीत का, उनमें किसी भी प्रकार के संगीत को थिएटर संगीत में ढालने की अतुलनीय क्षमता थी।

Mithileshwar is a well-known name in Hindi literature (fiction). Born on 31st December 1950, in Baisadeeh village of Bhojpur district in Bihar, India. He is a noted Hindi writer for writing on the rural heartland of India. He wrote beautifully about the rural parts of India, highlighting the struggles and problems faced by rural people of India. He started writing during his student period and has accumulated many awards in his career. His stories are mostly based on the state of the common man in our society. He describes the mental state of poor, exploited people from villages or the ones going through diverse conditions in a rapidly industrializing modern day India. He minutely observes people and writes with deep insight on their status in life and society.Mithileshwar's major works are - Babuji, Meghna Ka nirnay, Harihar Kaka, Chal Khusro Ghar Aapne (story collection); Juniya, Yuddhsthal, Prem Na Badi Upje Aur Anta Nahi (novel).

Mithileshwar

Story

हिंदी कथा साहित्य में मिथिलेश्वर एक जाना पहचाना नाम है। 31 दिसंबर 1950 को भारत के बिहार में भोजपुर जिले के बैसाडीह गांव में जन्मे वह भारत के ग्रामीण इलाकों पर लिखने के लिए प्रसिद्ध हिंदी लेखक हैं। उन्होंने भारत के ग्रामीण हिस्सों के बारे में, ग्रामीण लोगों के संघर्षों और समस्याओं पर खूबसूरती से लिखा है। उन्होंने अपने छात्र जीवन के दौरान ही लिखना शुरू कर दिया था और कई पुरस्कार अर्जित किये। उनकी कहानियों में अधिकतर हमारे समाज के आम आदमी की स्थिति , गांवों के गरीब, शोषित लोगों या तेजी से औद्योगीकरण वाले आधुनिक भारत में विविध परिस्थितियों से गुजर रहे लोगों की मानसिक स्थिति का बहुत ही मार्मिक चित्रण रहता है। चरित्रों का बारीकी से निरीक्षण करते हैं तथा जीवन और समाज में उनकी स्थिति पर गहरी अंतर्दृष्टि के साथ लिखते हैं।

मिथिलेश्वर की प्रमुख कृतियाँ हैं – बाबूजी, मेघना का निर्णय, हरिहर काका, चल खुसरो घर आपने (कहानी संग्रह) जूनिया, युद्धस्थल, प्रेम न बाड़ी उपजे और अंत नहीं (उपन्यास)।

मिथिलेश्वर

कहानीकार

Vibhanshu Vaibhav is a renowned playwright, actor, director, screenplay, and dialogue writer. He was honored with the UP Sangeet Natak Academy Award in 2019. Born in Pratapgarh in 1965, he graduated from Allahabad University and subsequently obtained a diploma in theater arts from Bharatendu Natya Academy, Lucknow. From 1987 to 1990, he served as an actor at Sri Ram Rangamandal and later became the head of Rangamandal.Mr. Vaibhav boasts a wealth of experience collaborating with prominent theater directors nationwide. He has directed numerous plays in various regional languages and has an extensive repertoire of over fifty acting roles. Notable works authored by Mr. Vaibhav include "Maharathi," "Babuji," "Kaho to Bolun," "Thumri," "Manthan," "Panchali," and "Gunda," which have garnered acclaim from figures such as Habib Tanveer, B.V. Karanth, B.M. Shah, Ranjit Kapoor, and M.K. Raina. His collaborations extend to distinguished directors like Raina, Waman Kendre, Raj Bisaria, and Fritz Bennewitz. Additionally, Mr. Vaibhav has made a mark as a successful writer in the film and television industry. Currently, he serves as a professor in the Acting department at the State University of Performing and Visual Arts in Rohtak.

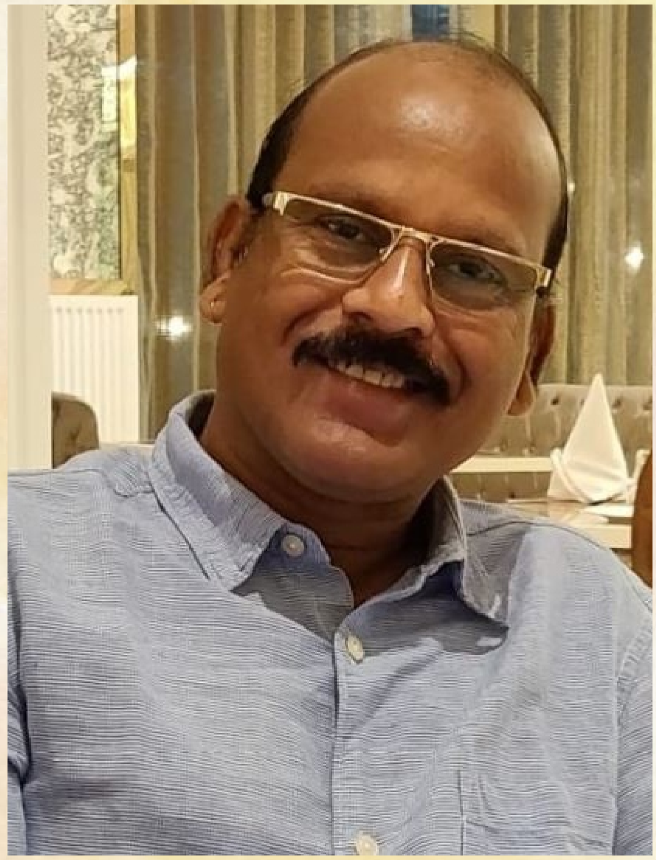

Vibhanshu Vaibhav

Play Adaptation

विभांशु वैभव

नाट्य रूपांतरण

नाटककार, अभिनेता, निर्देशक पटकथा , संवाद, लेखक एवं नाट्य प्रशिक्षक के रूप में विख्यात विभांशु वैभव बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं।1965 में प्रतापगढ में जन्में विभांशु वैभव ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ से नाट्यकला में डिप्लोमा प्राप्त किए। सन् 1987 से सन् 1992 तक श्रीराम सेन्टर,दिल्ली में बतौर अभिनेता कार्य किया और रंगमंडल प्रमुख भी रहे। देश के प्रसिद्ध नाट्य निर्देशकों के साथ कार्य करने का अनुभव रखने वाले श्री वैभव ने पचासों नाटकों का निर्देशन और नाट्य लेखन किया है। महारथी, बाबूजी, कहो तो बोलूॅ ,ठुमरी, मंथन , पांचाली , गुण्डा ,सोल सागा, नसीबोवाली, तरसत जियरा हमार, छुटटन दुबे के सपने, शब–ब–खैर , ना मैं धर्मी ना अधर्मी आदि नाटक खूब चर्चित और प्रशंसित रहे हैं।

उन्हें नाट्य लेखन के लिये उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के साथ देश के तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने ब.व. कारंत, हबीब तनवीर, राज बिसारिया, बंसी कौल, एम. के. रैना, रंजीत कपूर, बी.एम.शाह , अनामिका हक्सर , प्रसन्ना, कंवी अक्षरा, सी. आर. जाम्बे , बी.जय श्री, त्रिपुरारी शर्मा , वामन केन्द्रे, फ्रिट्स बेनेविट्स, नेमीचन्द जैन आदि महान नाट्य गुरूओं से विधिवत दीक्षा ली है। देश के कई नाट्य विद्यालयों और विश्वविद्यालय में अभिनय के प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया है। देश के कोने कोने में जाकर अवासीय नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन करके रंगकर्म की अलख जगायी है। हिन्दी की कई पत्र–पत्रिकाओं के लिये लेखन, अन्य भारतीय भाषाओं में नाटको का अनुवाद भी किया है। वर्तमान में दादा लखमीचन्द राज्य प्रदर्शन और दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक के अभिनय विभाग में बतौर प्रोफेसर कार्यरत।

About the Play

Babuji drama represents one of the ways in our society that wants to live life with its freedom and conditions. Hero of the drama Babuji is a man who wants to keep his inner artist alive along with social responsibilities in his life. His fondness in folk dance like nautanki, but his love for this gimmick also destroys his family life. The wife, son, his own companions and people of the society do not support him. He is pushed out of his own house. Despite all this, his dedication and love for art does not diminish. The echo of Tabla and the harmonium stays with him till his last breath. Each character of the drama represents the different persons and sectarian thoughts of our society. In our society, an artist still has to undergo a lot of struggle in his life.

Babuji play is a tribute to our one of most inspirational and most renowned Indian theatre personality Late Sri B.V. Karanth.

नाटक के बारे में

बाबूजी नाटक एक तरह से हमारे समाज के हर उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो जिन्दगी को अपनी स्वतंत्रता व शर्तों के साथ जीना चाहता है। नाटक का नायक बाबूजी एक ऐसा नायक है जो अपनी जिन्दगी में सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ साथ अपने अंदर के कलाकार को भी जीवित रखना चाहता है। नौटंकी जैसी लोकनाट्य में उसका मन रमता है, पर उसकी इसी नौटिंकी के प्रति प्रेम के कारण उसका अपना पारिवारिक जीवन भी बिखर जाता है । पत्नी ,बेटा ,उसके अपने साथी व समाज के लोग उसका साथ नहीं देते । उसे अपने ही घर से बाहर कर कर दिया जाता है । इन सब के बावजूद उसका कला के प्रति समर्पण व प्रेम कम नहीं होता । तबले की थाप और हारमोनियम की गूँज आखरी सांस तक उसके साथ रहती है । नाटक का हर एक पात्र हमारे समाज के अलग–अलग व्यक्तियों व तबके की सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं । हमारे समाज में आज भी एक कलाकार को अपनी जिन्दगी में बहुत ही संघर्ष व् द्वन्द से गुजरना पड़ता है । बाबूजी नाटक हम कलाकारों की तरफ से हमारे प्रेरणादायक व परम पूज्यनीय श्रद्धेय स्वर्गीय श्री ब. व. कारंत जी को समर्पित है ।

Rajesh Singh
Director

Graduate of Bihar University, Rajesh Singh initially received training in Theatre at Shriram Centre for Performing Arts, New Delhi. Later, he worked as an artist at Sahitya Kala Parishad Repertory Company and Shriram Centre Repertory Company. Then, he graduated from the National School of Drama with specialization in Theatre Techniques and Design in 2006. He also got training in Music from Gandharva Mahavidhyalaya. With the INLAKS Scholarship, he studied Advance Theatre Design, Direction and Stage Management at London Academy of Music and Dramatic Arts, United Kingdom in 2008-2009.

He developed his own style in Design and Direction while working with eminent theatre personalities such as B.V. Karanth, K. N. Panikkar, Ram Gopal Bajaj, D. R. Ankur, Mohan Maharishi and others. His acclaimed directorial ventures are 'Raas', Kafka's 'Metamorphosis', 'Ramleela', 'Jaanch Padtaal', 'Raag Darbari', 'Apna Apna Sawaal', 'Poster', 'Ek Zordaar Ladki ki Kahani', 'Ek Kalam Sadak Kinare', 'Blackboard Land', 'How to Disappear Completely and Never be Found', 'Aadami aur Tantra', 'Kabab', 'Babuji', 'Vyaktigat' etc.

His plays were selected under Best Play category twice and he got Best Director Award from Sahitya Kala Parishad, Govt. of Delhi. He received Mahindra award for Excellence in Theatre Arts for Sound Design of the play 'Laila Majnu' directed by Ram Gopal Bajaj in 2009. He was preview jury member for 54th International Film Festival of India (IFFI). Rajesh was also awarded with Central Sangeet Natak Akademi's Bismillah Khan Yuva Puraskar in the field of Scenic Design in the year 2017 and also received virendra narayan prestigious award. Presently, he is the Chief of the National School of Drama Repertory Company.

बिहार विश्वविद्यालय से स्नातक, राजेश सिंह ने रंगकर्म में षुरुआती प्रशिक्षण श्रीराम सेन्टर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, नयी दिल्ली से प्राप्त किया। बाद में, आपने साहित्य कला परिषद रंगमण्डल व श्रीराम सेन्टर रंगमण्डल में एक कलाकार के रूप में काम किया। तत्पश्चात आपने 2006 में रंग तकनीक व परिकल्पना में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की और गंधर्व महाविद्यालय से आपने संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्लैक्स छात्रवृत्ति के तहत आपने 2008–09 में लन्दन एकेडमी ऑफ म्यूजिक एण्ड ड्रामेटिक आर्ट्स, यूनाइटेड किंगडम से रंग परिकल्पना, निर्देशन व मंच प्रबन्धन का अध्ययन किया।

ब.व. कारन्त, के.एन. पणिक्कर, राम गोपाल बजाज, देवेन्द्र राज अंकुर, मोहन महर्षि व अन्य प्रख्यात रंग हस्तियों के साथ काम करते हुए आपने परिकल्पना व निर्देशन की अपनी विशेष शैली विकसित की। आपके प्रशंसित निर्देशकीय कार्यों में 'रास', 'मेटामोर्फ़ोसिस', 'रामलीला', 'जाँच पड़ताल', 'राग दरबारी', 'अपना अपना सवाल', 'पोस्टर', 'एक ज़ोरदार लड़की की कहानी', 'एक कलम सड़क किनारे', 'ब्लैकबोर्ड लैण्ड', 'हाउ टू डिसेपियर कम्पलीटली एण्ड नेवर बी फाउण्ड', 'आदमी और तंत्र', 'कबाब', 'बाबूजी', 'व्यक्तिगत' आदि शामिल हैं। साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार ने आपके दो नाटकों को सर्वश्रेष्ठ नाटक के तौर पर चुना और आपको सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित भी किया है। 2009 में प्रो. राम गोपाल बजाज द्वारा निर्देशित नाटक 'लैला मजनूँ' की ध्वनि परिकल्पना के लिए आपको महिन्द्रा पुरस्कार दिया गया। श्री राजेश को वर्ष 2017 में दृश्य परिकल्पना के लिए केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी के बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार एवं विरेन्द्र नारायण सम्मान से सम्मानित किया गया। आप 54वां भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव(आईएफएफआई) में प्रीव्यू चयन समिति के सदस्य रहे। वर्तमान में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल के प्रमुख हैं।

राजेश सिंह

निर्देशक

Director Note

Babuji drama in a way represents every person in our society who wants to live life with his freedom and independence. Babuji, the protagonist of the play, is a hero who wants to keep alive the artist within him along with the social structure in his life.He is interested in folk theater like Nautanki, but due to his love for this art, his own family life also gets disintegrated. His wife, son, his own friends and people of the society do not supports him. He is thrown out of his own house. Despite all this, his dedication and love for art does not diminish.The beats of the tabla and the echoes of the harmonium remain with him till his last breath. Every character in the play represents the thinking of different people and sections of our society. Even today in our society, an artist has to go through a lot of struggle and conflict in his life.

When I decided on doing this play with NSD Rangamandal, I came to know that this play was performed for the first time by Late Karanth ji with SRC Rangamandal. Karanth ji has used the folk and nautanki singing style in this play to make the soul and environment of the play more impressive.

Nautanki is one of the most popular folk opera theater performance forms of Northern India. Before the advent of Bollywood, Nautanki was the biggest medium of entertainment in the villages and towns of North India. The rich musical compositions and humorous, entertaining stories of Nautanki leave a deep impact on the imagination of the rural people.Therefore, I have recreated the songs composed and arranged by Kanrathji in this play. Considering the graph and tone of the play I have used two more folk songs. These plays are also an attempt to revive the tradition of live musical plays in Hindi theatre. Babuji drama is a tribute to our inspiration late Shri B. V. Karanth ji.

निर्देशकीय

बाबूजी नाटक हमारे समाज के हर उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो जिन्दगी को अपनी स्वतंत्रता व शर्तों के साथ जीना चाहता है। नाटक का नायक बाबूजी एक ऐसा नायक है जो अपनी जिन्दगी में सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ साथ अपने अंदर के कलाकार को भी जीवित रखना चाहता है। नौटंकी जैसी लोकनाट्य में उसका मन रमता है, पर उसकी इसी कला के प्रति लगाव के कारण उसका अपना पारिवारिक जीवन भी बिखर जाता है । पत्नी, बेटा, उसके अपने साथी व समाज के लोग उसका साथ नहीं देते । उसे अपने ही घर से बाहर कर कर दिया जाता है । इन सब के बावजूद उसका कला के प्रति समर्पण व प्रेम कम नहीं होता । तबले की थाप और हारमोनियम की गूँज उसके आखरी सांस तक उसके साथ रहती है । नाटक का हर एक पात्र हमारे समाज के अलग–अलग व्यक्तियों व तबके के सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं । हमारे समाज में आज भी एक कलाकार को अपनी जिन्दगी में बहुत ही संघर्ष व द्वन्द से गुजरना पडता है ।

जब मैंने इस नाटक को रा. ना. वि. रंगमंडल के साथ करने को सोचा तो ज्ञात हुआ कि इस नाटक को रंग विभूति स्व.ब.व.कारंत जी ने पहली बार श्री राम सेंटर रंगमंडल के साथ किया था, और विभांशु वैभव जी ने इसका नाट्य रूपांतरण किया । कारंत जी ने नाटक की आत्मा और परिवेश को प्रभावशाली बनाने के लिए इस नाटक में लुप्तप्राय होती लोक एवं नौटंकी शैली का प्रयोग किया है।

नौटंकी उत्तर भारत के सबसे लोकप्रिय लोक ओपेरा थिएटर प्रदर्शन रूपों में से एक है। बॉलीवुड के आगमन से पहले उत्तर भारत के गांवों और कस्बों में नौटंकी सबसे बड़ा मनोरंजन का माध्यम था। नौटंकी की समृद्ध संगीत रचनाएँ और हास्यप्रद, मनोरंजक कहानियाँ ग्रामीण लोगों की कल्पना पर गहरा प्रभाव डालती हैं। अतः मैंने नाटक में कारंत जी के स्वरबद्ध किए और उनके द्वारा संयोजित लोक गीतों को यथावत रखने का प्रयास किया है, हां नाटक के ग्राफ और तेवर को देखते हुए मैंने दो और लोक गीतों का अलग से प्रयोग किया है, साथ ही नाटक की शुरुआत में ब. व कारंत जी द्वारा गाये गीत गणेश वेदना से नाटक का आरंभ रखा है। साथ ही इस तरह के नाटकों द्वारा हिंदी रंगमंच में सजीव संगीतमय नाटकों की परंपरा को फिर से गति देने का एक प्रयास भी है। बाबूजी नाटक हम कलाकारों की तरफ से हमारे प्रेरणादायक व परम पूज्यनीय श्रद्धेय स्वर्गीय श्री ब. व. कारंत जी को श्रद्धांजलि है ।

After completing her graduation in English literature from Delhi University, Nalini R Joshi did an advanced diploma in Fashion designing and then post graduate diploma with a specialization in acting from the National School of Drama in 1999. A multi-talented actor, costume designer, director and teacher, she has acted with the directors such as Ram Gopal Bajaj, Tripurari Sharma, Mariuz Orsky, Prasanna, B.V. Karanth, Bansi Kaul, Bhanu Bharti, Mohan Maharishi, Robin Das etc. and designed costumes for numerous plays like 'Gappu Gop Gopanggamdas', 'Chanakya Vishnugupt', 'Andha Yug', 'Teen Meheriyan', 'Familiar Stranger', 'Aurangzeb', 'Tamasha na Hua', 'Badshah Rangeela', 'Uncle Vanya', 'Virasat', 'Mahapoor', 'Raktpushp' and many others for different directors. She also designs costumes for Television and films.As a festival coordinator, she has coordinated various theatre festivals like Bharat Rang Mahotsav, Jashn-e- Bachpan, Bal Sangam etc. She has directed plays in several schools and workshops organized by the reputed institutes. A visiting faculty for costume designing at the National School of Drama, Nalini also teaches at different institutions. She has been awarded the Sangeet Natak Akademi Bismillah Khan Yuva Puraskar for Costume Designing.

Nalini R Joshi

Costume Design

नलिनी आर. जोशी

वेशभूषा परिकल्पना

दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद नलिनी आर जोशी ने फैशन डिजाइनिंग में एडवांस डिप्लोमा किया और फिर 1999 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में विशेषज्ञता के साथ स्नात्कोत्तर उपाधि प्राप्त की। एक बहुस्तरीय अभिनेत्री, वेशभूषा परिकल्पक, निर्देशक और शिक्षक नलिनी ने अब तक विभिन्न निर्देशकों रामगोपाल बजाज, त्रिपुरारी शर्मा, मारियूज ओरस्की, प्रसन्ना, ब.व. कारंत, बंसी कौल, भानु भारती, मोहन महर्षि, रोबिन दास आदि द्वारा निर्देशित नाटकों में अभिनय किया है। आपने 'गप्पू गोप गोपंगमदास', 'चाणक्य विष्णुगुप्त', 'अंधायुग', 'तीन मेहरियाँ', 'फैमिलियर स्ट्रेंजर', 'औरंगजेब', 'तमाशा ना हुआ', 'बादशाह रंगीला', 'अंकल वान्या', 'विरासत', 'महापूर', 'रक्तपुष्प' आदि नाटकों की वेशभूषा परिकल्पना की है। इसके अलावा आपने टेलीविजन और फिल्मों के लिए भी वेशभूषा परिकल्पना की है।

एक महोत्सव समन्वयक के रूप में आपने विभिन्न रंग महोत्सवों जैसे कि भारत रंग महोत्सव, जश्ने–बचपन, बाल संगम आदि का समन्वयन किया है। आपने कई विद्यालयों और प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में नाटकों का निर्देशन किया है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में वेशभूषा विषय की अतिथि संकाय नलिनी देश के विभिन्न संस्थानों में पढ़ाती रहीं हैं। आपको वेशभूषा परिकल्पना के लिए संगीत नाटक अकादेमी के बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है।

Born in Shimla (H.P) in 1958, Avtar Sahni:graduated from National School of Drama (Nehain 1984 with specialization in Direction. Later NSD granted him a fellowship for one year to work on subject "Interaction Between Traditional Performine of Arts and Modern Theatre" under the guidance of Shri Ratan Thiyam in Manipur. He has been awarded with a number of prestigious awards in the field of Theatre such as, Sangeet NatakAkademi Award-2017 (in Allied Theatre Arts-foracontribution in Stage Lighting Design), Chamanlala Memorial Award-2018 (Excellence in Theatre Lighting Design), Natya Guru Samman by Sanskar Bharti, New Delhi in 2017, Best Director Award by Nat Samrath Theatre Awards - New Delhi. He established his Theatre group called ART (Actor'sRepertory Theatre) in 2004 and directed about 45-plays with the group; with Shri Ram Centre Repertory Company, New Delhi; Bhartendu Natya Academy RangMandal, Lucknow; Sahitya Kala Parishad Repertory, New Delhi, Chorus Repertory, Imphal. His directoriala 'Uljhan' was selected by Sangeet Natak Akademi, New Delhi for its National Theatre Festival in 1992 and was widely acclaimed. Recently, he has designed & directed 'Rashomon' (2018). He is a visiting faculty at a number of theatre institutions and conducted many theatre workshops across the country. He has participated innumerous international theatre festivals and worked as technicaldirector for Ibsen International Theatre Festival, New Delhi; Bharat Rang Mohatsav (NSD) at Lucknow, Chennai, Amritsar; and for Days of Delhi in Moscow (Govt. of Delhi). He was also a Light Designer for Commonwealth Games 2010, New Delhi (Games Village). Avtar Sahni has designed lights for well known theatre directors like Prasanna, Barry John, Ratan Thiyam, Robin Das, A.T. Subaki, Sanjay Upadhayay, Suryamohan Kulshestha among others. Presently, he is working as a freelance theatre Director, Designer and Actor.

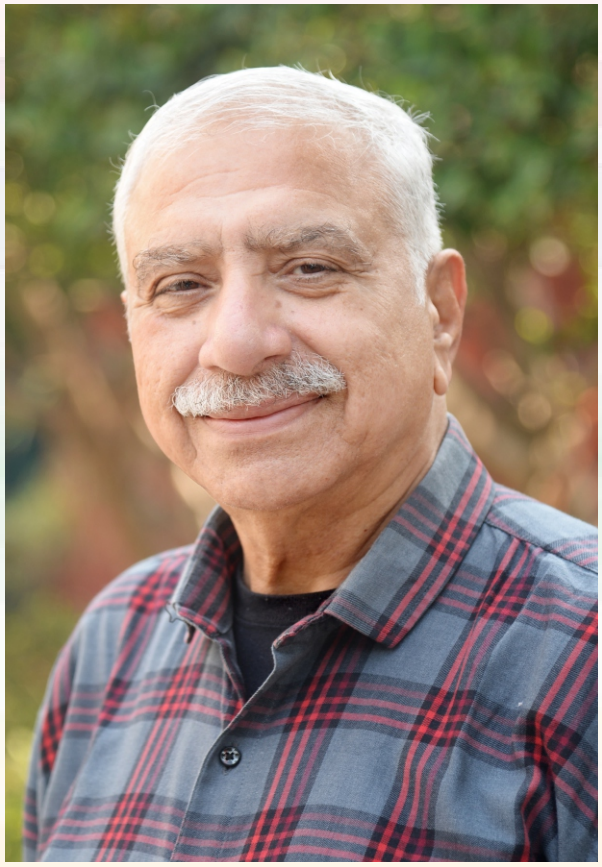

Avtar Sahni

Light Designer

अवतार साहनी

प्रकाश परिकल्पना

सन 1958 में शिमला (हि.प्र.) में जन्मे, अवतार साहनी ने 1984 में निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की । बाद में, रा.ना.वि. ने आपको मणिपुर में श्री रतन थियाम के मार्गदर्शन में पारम्परिक प्रदर्शन कला और आधुनिक रंगमंच के बीच संवाद' विषय पर काम करने के लिए एक वर्ष की फैलोशिप प्रदान की। आपको रंगमंच के क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार–2017 (एलाइड थिएटर आर्ट्स–प्रकाश परिकल्पना में योगदान के लिए), चमनलाल मेमोरियल अवार्ड–2018 (मंच प्रकाश परिकल्पना में उत्कृष्टता के लिए), संस्कार भारती, नयी दिल्ली के नाट्य गुरु सम्मान–2017, नटसम्राट, नई दिल्ली द्वारा सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार शामिल है। आपने 2004 में आर्ट (एक्टर्स रैपर्टरी थिएटर) नाम से अपने थिएटर ग्रुप की स्थापना की और ग्रुप के अलावा, श्री राम सेंटर रंगमण्डल, नयी दिल्लीः भारतेन्दु नाट्य अकादेमी रंगमण्डल, लखनऊः साहित्य कला परिषद रंगमण्डल, नयी दिल्ली, कोरस रंगमण्डल, इंफाल के साथ लगभग 45 नाटकों का निर्देशन किया है। आपके निर्देशन में तैयार नाटक 'उलझन' को 1992 में संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्ली के राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव के लिए चुना गया था और व्यापक रूप से सराहा गया था। साल 2018 में आपने 'रशोमन' नाटक की परिकल्पना व निर्देशन किया है । आप कई रंग संस्थानों में अतिथि संकाय हैं और देश भर में कई रंग कार्यशालाएँ आयोजित कर चुके हैं। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय रंग महोत्सवों में भाग लेने के अलावा आप इब्सन इन्टरनेशनल थिएटर फेस्टिवल, नयी दिल्लीः लखनऊ, चेन्नई, अमृतसर में हुए रानावि के भारत रंग महोत्सव, और मॉस्को (दिल्ली सरकार) में डेज ऑफ देहली के तकनीकी निदेशक रहे। आप कॉमनवेल्थ गेम्स, नई दिल्ली (गेम्स विलेज)–2010 के लाइट डिजाइनर भी रहे हैं। अवतार साहनी ने प्रसन्ना, बैरी जॉन, रतन थियाम, रॉबिन दास, ए.टी. सुबाकी, संजय उपाध्याय, सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ आदि जाने–माने रंग निर्देशकों के लिए प्रकाश परिकल्पना की है। वर्तमान में, आप एक स्वतंत्र रंग निर्देशक, परिकल्पक व अभिनेता के रूप में काम कर रहे हैं।

ON STAGE

Babuji	:	Rajesh Singh / Suman Kumar
Kaushalya	:	Shilpa Bharti / Pooja Gupta
Badkau	:	Mazibur Rehman / Vivek Kanaujiya
Chhotku	:	Satyender Malik / Ankur Singh
Jagesar	:	Naveen Singh Thakur / Aalok Ranjan
Sursati	:	Potshangbam Rita Devi / Shivani Bhartiya
Kaka & Dhanpat	:	Shiv Prasad Gond
Lachhu	:	Bikram Lepcha / Shyam Kumar Sahani
Kaalideen	:	Utsav
Daroga	:	Tabish Khan / Akhil Pratap Gautam
Rambhajan Singh	:	Akhil Pratap Gautam / Tabish Khan
Sipahi	:	Hira Lal Roy
Basanti	:	Madhurima Tarafder / Pali Phukan
Farebi	:	Parteek Badera
Villegers	:	Motilal Khare, Satish Kumar, Narayan Ramesh Pawar, Sameer Jiwan Ramteke, Kan nath, Anant Sharma

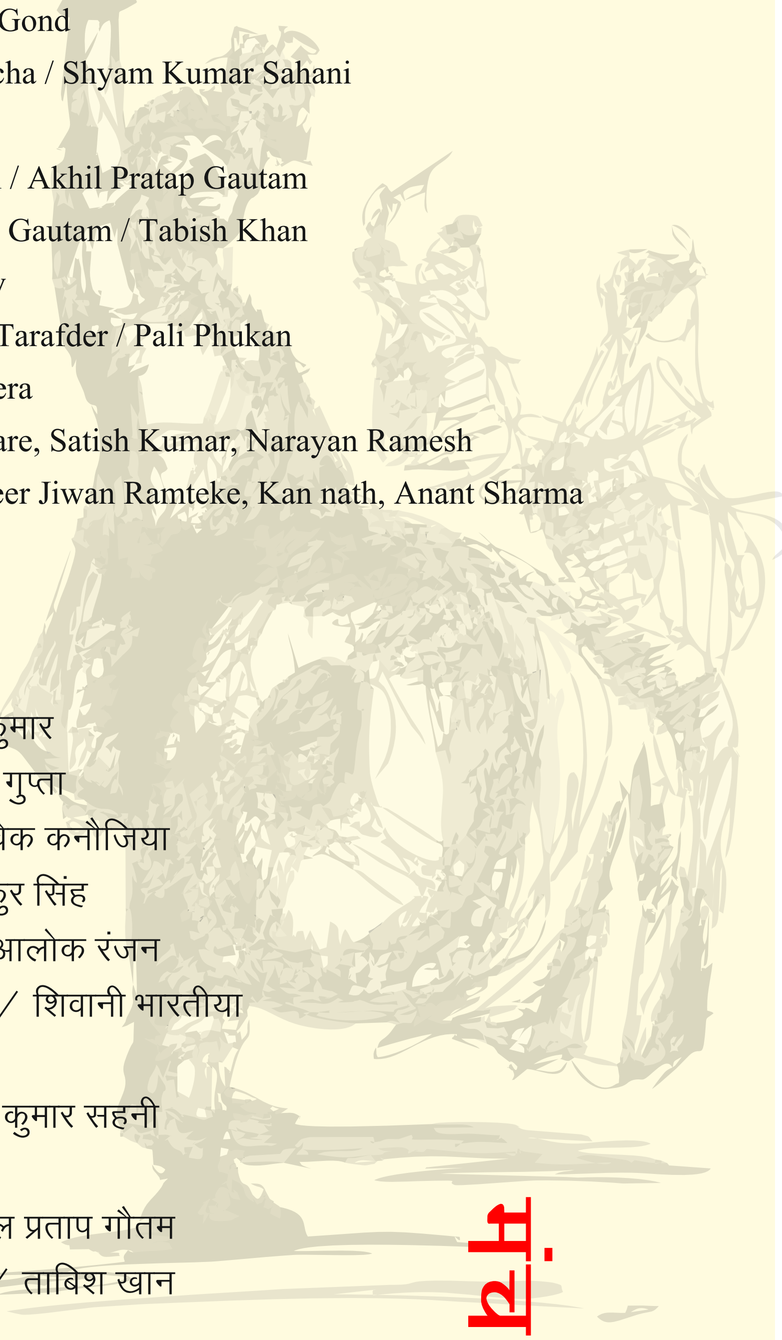

मंच पर

बाबूजी	:	राजेश सिंह /सुमन कुमार
कौशल्या	:	शिल्पा भारती / पूजा गुप्ता
बडकऊ	:	मज़िबुर रहमान / विवेक कनौजिया
छोटकू	:	सत्येन्द्र मलिक / अंकुर सिंह
जगेसर	:	नवीन सिंह ठाकुर / आलोक रंजन
सुरसती	:	पोतशंगबम रीता देवी / शिवानी भारतीया
काका व धनपत	:	शिव प्रसाद गोंड
लच्छू	:	बिक्रम लेप्चा / श्याम कुमार सहनी
कालीदीन	:	उत्सव
दरोगा	:	ताबिश खान / अखिल प्रताप गौतम
रामभजन सिंह	:	अखिल प्रताप गौतम / ताबिश खान
सिपाही	:	हीरा लाल रॉय
बासंती	:	मधुरिमा तरफदार / पाली फुकन
फरेबी	:	प्रतीक बढ़ेरा
ग्रामीण व् बाराती	:	मोतीलाल खरे, सतीश कुमार, नारायण रमेश पवार, समीर जीवन रामटेके, कान नाथ, अनंत शर्मा

OFF STAGE

Repertory Chief	:	Rajesh Singh
Light Design	:	Avtar Sahani
Set & Light Assistant	:	Shyam Kumar Sahani
Costume Design	:	Nalini R. Joshi
Assistant	:	Poonam, Shazia
Costume Incharge	:	Nisha, Parwati Bisht
Choreography	:	Nidhi Mishra
Set Exicution	:	Vikram Kumar, Manoj, Taqmir, Rizwan
Light Exicution	:	Md. Suleman, Sunil, Shubham
Property Incharge	:	Motilal Khare
Assistant	:	Parteek, Sameer
Sound Technician	:	Swarn Lata, Mukesh Kumar
Sound Arrangment	:	Santosh Kumar (Sandy)
Harmonium	:	Rajesh Pathak
Benjo	:	Narayan Thakur
Sarangi	:	Anil Mishra
Rhythm	:	Shialendra Chouhan
Assistant	:	Naveen Singh Thakur
Poster - Brochure Design	:	Ali Raza, Mazibur Rehman
Make up	:	Shivprasad, Hiralal, Shivani
Photography	:	Deepak Kumar, Piyush Shrivastava
Publicity	:	E. Gajalakshmi, Prakash Jha
Exhibition	:	Rajbal, Pawan Kumar
Stage Manager	:	Shyam Kumar Sahni
Admin & Accounts	:	Zubair Bedi
Admin Assistant	:	Pawan Kumar, Manoj
Assistant Director	:	Shiv Prasad Gond
Story	**:**	**Mithileshwar**
Play Adaptation	**:**	**Vibhanshu Vaibhav**
Music	**:**	**Lt. B.V. Karanth**
Scenic Design & Direction	**:**	**Rajesh Singh**

मंच पर

रंगमंडल प्रमुख	:	राजेश सिंह
प्रकाश परिकल्पना	:	अवतार साहनी
मंच एवं प्रकाश सहायक	:	श्याम कुमार सहनी
वेशभूषा परिकल्पना	:	नलिनी आर. जोशी
सहायक	:	पूनम दाहिया, शाज़िया बतूल
वेशभूषा प्रभारी	:	निशा, पार्वती बिष्ट
नृत्य संयोजन	:	निधि मिश्रा
मंच निर्माण	:	विक्रम, मनोज, तक्मीर, रिज़वान
प्रकाश निष्पादन	:	मो. सुलेमान, सुनील, शुभम
मंच सामग्री	:	मोतीलाल खरे
सहायक	:	परतीक, समीर
ध्वनि तकनीशियन	:	स्वर्णलता, मुकेश कुमार
ध्वनि व्यवस्था	:	संतोष कुमार (सैंडी)
हारमोनियम	:	राजेश पाठक
बेंजो	:	नारायाण ठाकुर
सारंगी	:	अनिल मिश्रा
तालवाद्य	:	शैलेन्द्र चौहान
सहायक	:	नवीन सिंह ठाकुर
पोस्टर व ब्रोशर परिकल्पना	:	अली रज़ा, मज़िबुर रहमान
मेकअप	:	शिवप्रसाद, हीरालाल, शिवानी
फोटोग्राफी	:	दीपक कुमार, पीयूष श्रीवास्तव
प्रचार – प्रसार	:	ई. गजलक्ष्मी, प्रकाश झा
प्रदर्शनी	:	राजबल, पवन कुमार
मंच प्रबंधक	:	श्याम कुमार सहनी
प्रशासन व लेखा	:	जुबैर बेदी
प्रशासन सहायक	:	पवन कुमार, मनोज
सहायक निर्देशक	:	शिव प्रसाद गोंड
कहानी	:	**मिथिलेश्वर**
नाट्य रूपांतरण	:	**विभांशु वैभव**
संगीत	:	**स्व. ब. व. कारंत**
दृश्य परिकल्पना एवं निर्देशन	:	**राजेश सिंह**

National School of Drama Repertory Company

National School of Drama Repertory was formed in 1964-65 on an experimental basis by Sh. E. Alkazi. In the beginning, it is consisted of only four actors and later expanded into a larger group of actors, musicians and technicians, mainly drawn from graduates of the National School of Drama, Delhi. In 1964, Late Shri Om Shivpuri led the Company and in 1977, Late Shri Manohar Singh became the first regular Chief of the Repertory. When Manohar Singh left the Repertory Company in 1985 for a short period, its functioning was looked after by Ms. Uttara Baokar and Ms. Surekha Sikri. Late Shri J.N. Kaushal officiated as the Chief till 1988. He was followed by Prof. Ram Gopal Bajaj from 1989 to 1994; Shri Kaushal took over the rein one more time from 1994 to 97; Shri Suresh Sharma was the regular Chief of the Repertory Company from 1999 to 2021. Presently, Shri Rajesh Singh is the Chief of the Repertory Company.

Over the years, Repertory has produced a variety of plays ranging from stylized musical to realistic and contemporary adaptation of foreign and Indian plays. In addition, several eminent directors of national and international repute from within the country and abroad have worked with the Company. The Repertory has performed over 187 plays by 97 playwrights and has worked with 95 directors. Quite a few of the actors of the company have emerged as celebrities in theatre, cinema and television in India. The Repertory tours extensively all over the Country and has made several successful, trips to Germany, Poland, UK, Nepal, Mauritius, Bangladesh and China.

In 1993, the Company organized a major Festival of Mohan Rakesh's plays to mark his 20th death anniversary. In 1991 on the occasion of the Company's Silver Jubilee, Rang Yatra an exhibition consisting its Photographs, Set-Models, Costumes, Properties and Poster etc. was also put up. August 22, 2013 was the Repertory Company's 50th foundation day and Golden Jubilee Celebrations were kick-started on this day. The second important event of Company's Golden Jubilee Celebrations was held from March 22 to 24, 2014, where all the ex-repertory company members were invited. On this occasion scenes and songs from memorable productions of the past were presented to the audience, in what turned out to be an extremely nostalgic evening for many people. On the occasion of Azadi ka Amrit Mahotsav, Repertory performed plays like 'Pehla Satyagrahi' and 'Khoob Ladi Mardaani, Subhadra Ki Zabaani' across the country, while also producing classical plays like 'Abhijnan Shakuntalam' and 'Andha Yug'.

Aknowledgements

Shri Chittranjan Tripathy
Director, NSD

Shri Pradeep K. Mohanty
Registrar, NSD

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
रंगमण्डल

इब्राहिम अल्काजी ने एक प्रयोग के मद्देनज़र वर्ष 1964–65 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमण्डल की स्थापना की। शुरू में इसमें सिर्फ़ चार अभिनेता थे। बाद में ऐसे अनेक अभिनेताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों को लेकर इस रंगमण्डल का विस्तार हुआ, जो मुख्यतः राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक थे। वर्ष 1964 में स्व. ओम शिवपुरी और बाद में 1977 में स्व. मनोहर सिंह प्रथम नियमित रंगमण्डल प्रमुख बने। वर्ष 1985 में मनोहर सिंह के जाने के बाद स्व. उत्तरा बावकर और सुरेखा सीकरी ने रंगमण्डल का कार्यभार सम्भाला।

कालान्तर में स्व. जे. एन. कौशल रंगमण्डल के प्रमुख के रूप में पदासीन हुए। 1988 से 1994 तक प्रो. राम गोपाल बजाज रंगमण्डल के प्रमुख रहे। उनके बाद स्व. जे.एन. कौशल ने 1994 से 1997 तक पुनः रंगमण्डल प्रमुख का कार्यभार सम्भाला। वर्ष 1999 से 2021 तक श्री सुरेश शर्मा रंगमण्डल प्रमुख के पद पर रहे। वर्तमान में श्री राजेश सिंह रंगमण्डल प्रमुख हैं।

रंगमण्डल वर्षों से विविध प्रकार की नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन करता रहा है, जिनमें शैलीबद्ध संगीतधर्मी नाटकों के साथ–साथ यथार्थवादी समसामयिक प्रस्तुतियाँ भी शामिल हैं। इनके साथ–साथ रंगमण्डल ने विदेशी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद और नाट्य रूपान्तरण भी प्रस्तुत किए हैं। रंगमण्डल के साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रंग–निर्देशकों ने काम किया है।

रंगमण्डल ने 1992–1993 में मोहन राकेश की 20वीं पुण्यतिथि पर उनके नाटकों का महत्वपूर्ण उत्सव आयोजित कर उन्हें श्रद्धाँजलि दी। रंगमण्डल की रजत जयन्ती के अवसर पर वर्ष 1991 में रंगमण्डल की प्रस्तुतियों से सम्बन्धित छायाचित्र मंच–विन्यास, वेशभूषा, मंच सामग्री पोस्टर आदि को शामिल करते हुए 'रंगयात्रा' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

रंगमण्डल ने 97 नाटककारों के लगभग 187 से भी अधिक नाटक प्रस्तुत किए हैं और अब तक लगभग 95 रंग–निर्देशकों ने रंगमण्डल के साथ कार्य किया है। रंगमण्डल से सम्बद्ध अनेक अभिनेताओं ने थिएटर, सिनेमा और टेलीविजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। रंगमण्डल ने पूरे भारतवर्ष के व्यापक दौरे किए हैं तथा देश से बाहर जर्मनी, पोलैण्ड, ब्रिटेन, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश एवं चीन में भी सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं।

दिनाँक 22 अगस्त, 2013 को रंगमण्डल ने अपनी 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा दिनाँक 22, 23 एवं 24 मार्च, 2014 को धूमधाम से रंगमण्डल ने पूर्व में कार्य कर चुके अपने सभी कलाकारों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर उन कलाकारों ने यादगार नाट्य प्रस्तुतियों के कुछ दृश्यों को व पुराने नाटकों के गीतों को प्रस्तुत किया।

आज़ादी के अमृत महोत्सव के मौक़े पर रंगमण्डल ने 'पहला सत्याग्रही' व 'खूब लड़ी मर्दानी, सुभद्रा की ज़बानी' जैसे नाटकों का देश भर में प्रदर्शन किया वहीं 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'अन्धा युग' जैसे क्लासिक नाटक भी तैयार किये हैं।

आभार

श्री चित्तरंजन त्रिपाठी
निर्देशक, रा.ना.वि.

श्री प्रदीप के. मोहंती
कुलसचिव, रा.ना.वि.

NSD REPERTORY COMPANY ARTISTS 2023-24

Shiv Prasad Gond

Pooja Gupta

Potshangbam Rita Devi

Vivek Kanaujiya

Mazibur Rehman

Bikram Lepcha

Shilpa Bharti

Madhurima Tarafder

Anant Sharma

Ankur Singh

Suman Kumar

Satyender Malik

Shazia Batool

Poonam Dahiya

Utsavdan Gadhvi

Aalok Ranjan

Ramteke Sameer Jeewan

Tabish Khan

Pawar Narayan Ramesh

Parteek Badera

Hira Lal Roy

Pali Phukan

Shivani Bhartiya

Satish Kumar

Akhil Pratap Gautam

Kan nath

NSD REPERTORY COMPANY

Technical & Administration Staff

Swarnalata

Vikram Kumar

Mukesh Kumar

Mohd. Suleman

Nisha

Parwati Bisht

Zubair Bedi

Rajbal

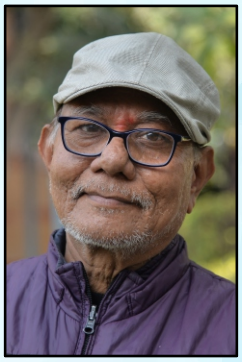
Moti Lal Khare

Naveen Singh

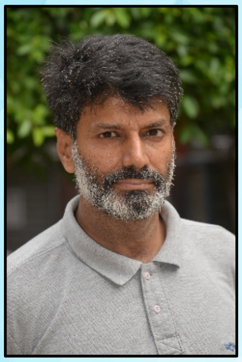
Manoj Kumar

Aditya Verma

Sunil

Taqmeer

Pawan Kumar

Manoj Athwal

Shubham

Rizwan

Munna

Musicians

Rajesh Pathak
(Harmonium)

Anil Mishra
(Sarangi)

Ateeq
(Nakkara)

Shailendra
(Rytham)

Narayan Thakur
(Benjo)

Choreography

Nidhi Mishra

National School of Drama
Repertory Company
presents

National School of Drama
Repertory Company
Bahawalpur House, Bhagwandas Road, New Delhi - 110001
Ph: 011- 23031105, 23031106 Web:www.nsd.gov.in
Email : nsdrepertory@yahoo.co.in

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
रंगमंडल
बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड, नई दिल्ली – 110001
दूरभाष : 011- 23031105, 23031106 वेबसाइट : www.nsd.gov.in
Email : nsdrepertory@yahoo.co.in